संदर्भ सूचि

	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ क्र.
१	डॉ.भगीरथ मिश्र	'काव्यशास्त्र'	७७ ।
२	वही	वही	७८ ।
३	वही	वही	७८ ।
४	वही	वही	७८।
५	वही	वही	१७ ।
६	डॉ.शान्तिस्वरूप गुप्त	'हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास और मृगनयनी'	२७ ।
७	यशपाल	अमिता	प्राक्कथन
८	डॉ.रामनारायण सिंह 'मधुर'	हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास	१६२ ।
९	यशपाल	अमिता	८८ ।
१०	वही	वही	२१९ ।
११)	वही	वही	२२० ।
१२	वही	वही	२२० ।
१३	वही	वही	२२० ।
१४	वही	वही	२२० ।
१५	वही	वही	२२१ ।
१६	वही	वही	२२१ ।
१७	वही	वही	२२२ ।
१८	वही	वही	२२२ ।
१९	वही	वही	२२२ ।

चतुर्थ अध्याय

अमिता उपन्यास का चरित्र चित्रण --

आधुनिक उपन्यास में चरित्र-चित्रण को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। यथार्थता और समुचित प्रभाव के साथ चरित्र-चित्रण करना उपन्यासकार की सफलता का द्योतक है। डॉ.भगीरथ मिश्र जी चरित्र चित्रण के बारे में कहते है, --

" यदि उपन्यास के पात्र उपन्यास के चरित्र जैसे ही न लगकर जीवन में देखे सुने और सम्पर्क में आये ममता, घृणा, द्वेष, सौहार्द करुणा आदि के भाव स्वत: जगने लगते हैं। समझिये कि उपन्यास में सफल चरित्र-चित्रण हुआ है।"[१]

चरित्र चित्रण सफल कैसा होता है यह स्पष्ट करते हुये डॉ.शान्ति स्वरूप गुप्त कहते है --

" जिस लेखक की वर्णन-शैली जितनी अधिक सक्षम, विस्तार और गहराई में जानेवाली तथा ब्यौरों को सजिव रूप में प्रस्तुत करने की क्षमतावाली होगी उसका चरित्र-चित्रण उतनाही प्रभावशाली होगा।"[२]

चरित्र-चित्रण की दृष्टिसे यह उपन्यास अन्य कृतियों से कुछ अलग विशेषताएँ रखता है -- अमिता से पूर्व यशपाल के समस्त उपन्यास घटनाओं और परिस्थितियों तथा सयोगोंपर आधारित हैं। उनमें कथानकका विकास छोटी-छोटी घटनाओं द्वारा होता है, चरित्र-चित्रण उनमें भी सफल हुआ। चरित्र-चित्रण द्वारा कथा का विकास आज सर्वोत्कृष्ठ शिल्प-विधा मानी जाती हैं। 'अमिता' अशोक की कलिंग विजय और एक विशेष घटना और परिस्थितिपर आधारित है परन्तु उपन्यासकार का ध्येय केवल उस घटना का चित्रण करना ही नहीं हैं। 'अमिता' उपन्यास चरित्र-प्रधान उपन्यास हैं।

डॉ.भगीरथ मिश्र जी ने चरित्र-चित्रण करते हुये तीन प्रणालियोंको अपनाया है और उसे उन्होंने आवश्यक भी माना है जैसे --

" १) चरित्र का व्यक्तित्व ।

२) उसके बौध्दिक गुण और

३) उसके चारित्रिक गुण ।" [३]

उपयुक्त तीन प्रणालियोंके अतिरिक्त पात्र विशेष के कार्य भी उसके चरित्र पर विशेष प्रकाश डालते हैं । व्यावहारिक दृष्टिसे यह विधि अत्यन्त मनोवैज्ञानिक है, क्योंकी मनुष्य क्या है,उसका व्यक्तित्व कैसा है यह अब उसके कहने से अधिक उसके कार्यों द्वारा प्रस्फुटित और प्रमाणित होता है । यशपालजी ने चरित्र-चित्रण की प्रणालियों को अपने उपन्यासों में अपनाया है । किन्तु प्रथम दो प्रणालियोंकी अपेक्षा अंतिम प्रणालीको अधिक अपनाया है ।

मन का चित्रण भी उपन्यासकारके ध्येय है जो अत्यन्त कठीन है । मनमें नाना-प्रकारकी लहरे समय-समय पर हिलोले होती रहती है तथा कोई भी कार्य करने से पूर्व तर्क-वितर्क के घात-प्रतिघात द्वारा मानस की उत्ताल तरंगे हिलोरे लेती हैं । एक दूसरे से टकराती है,उनमें संघर्ष होता है, मानस स्वयं अपने मनसे वार्तालाप करता है तब कहीं जाकर वह कार्य करता है ।

यशपाल के उपन्यास बाधाओं,परिस्थितियों और घटनाओं पर आधारित होने के कारण उनके उपन्यासों में प्राय: यह तत्व पर्याप्त नहीं है । `दिव्या`, से `देशद्रोही` और` मनुष्य के रूप` में ये तत्व कुछ स्थलोंतक पा सकते हैं । किन्तु `अमिता` में तो उसका पूर्ण निराकरण है । अशोक के हृदय परिवर्तन से पूर्व यदि हिंसा-अहिंसा ,प्रेम घृणा,दया-करूणा,धर्म-अधर्म, का एक द्वन्द्व दिखाया जाता तो निस्सन्देह वह अत्यन्त ही सुन्दर और प्रभावशाली तथा मनोवैज्ञानिक हो सकता था ।

अमिता में एक पात्र द्वारा दूसरे पात्र के संबंध में बताने की या पात्र द्वारा अपनी बात कहने की प्रणाली का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है । कलिंग की राजेश्वरी

अहिंसा और धर्म में विश्वास करती है। युध्द की अहिंसा से घृणा करती है तथा बौध्द धर्म में उनकी अटल अस्था है। अमिता स्थिर पात्र है। यह आचार्य से वार्तालाप करते हुये स्वयं ही प्रगट होता है --

" आचार्य अशोक जो कल करेगा आप आजही कर डालना चाहते हो। प्रजा का द्वार छीन कर प्रजा की रक्षा नहीं होगी। अशोक जो पाप करेगा,उसका फल वह पायेगा। अशोक के पाप का विरोध करने के लिए हम पाप नहीं करेंगे। महामति आचार्य,भगवान की कृपा पर विश्वास नहीं करते, महास्थविर सिध्द जीवक की चमत्कार सिध्दि पर भरोसा नहीं कर सकते तो जो चाहे करे परन्तु प्रजा में किसी का घर-द्वार नहीं छिना जा सकेगा। इन विहारों और चैत्यों को हिंसक सैनिकों के शिविर नहीं बनने देंगे।" ४

यशपाल ने कहीं-कहीं विश्लेषण द्वारा भी चरित्र-चित्रण करने के उपन्यासकार के इस अधिकारका उपयोग करते है, जिसमें वह स्वयं सामने आकर अपने विचार प्रकट कर सकता है।

पात्रों की वेशभूषा और उनके रूप-वर्णन द्वारा एक सजीव चित्र अंकित हो जाता है। वेशभुषा और रूप-वर्णन,जितना सुन्दर और स्पष्ट ` दिव्या ` में बना है उतना ` अमिता ` में नहीं यद्यपि अवकाश और स्थल यहाँ भी उतनाही था। पात्रों की भावभंगिमाओं,मुद्राओं तथा अंग-विक्षिप्तों द्वारा भी उनके हृदय में उठते विचार और भाव स्पष्ट हो उठते है और उनसे चरित्र भी अधिक निखर जाता है। प्रेमचंद्र वृन्दावलाल वर्मा की भाँति भी यशपालजी ने इस ढंग से पर्याप्त चित्रण किया है।

` अमिता ` --

नामकरन से ही पता चलता है कि बालिका अमिता ही उपन्यास की नायिका है। ` अमिता ` हमें अलिंद में क्रीडा करती हुई,उछलती-कूदती अपने प्रियबभ्रू के पास आती हुई रंगमंच पर स्पष्ट दिखाई देती है। राजकुमारी अमिता के मोतियों की लड़ियों से बाँधे हुए चिकने काले केशों के कुंडल उछल-कूद के कारण उसके गोल गोरे

चेहरे पर बिखर गए थे । राजकुमारी के शरीर पर सोने के तारों से मढे लाल हुशारे के कपडे की बंडी थी । बालिका के फुले हुए शरीर में उदर और कटि का भेद नहीं था । पीले पीले रेशम का छोटा-सा शटक उसके उपर पर सोने की मेखला में अटका हुआ था । कोमल कलाइयोंपर रत्नजडीत कंगन थे । गले में पहना गया चंद्रहार -बचपन की उछल-कूद के कारण कन्धे पर झटक गया था ।

बभ्रू को स्नेह के आवेश में अपनी ओर लपकते देखकर महाराजकुमारी अमिता ने अपनी छोटी प्यार भरी बाँहे उसके तरफ फैल दी । अमिता के हृदय में भी स्नेह पैदा हो गया । उसके लाल कपोल के समान होंठ आगे बढकर गोल हो गए । अमिता ने कुत्ते को बुला दिया --

" आ बभ्रू , आ । " [5]

इस घटना से पाठक के हृदय में उत्सुकता पैदा होती है । उद्यान में अपने कुत्ते के साथ खेलती चपल बालिका उपन्यास की नायिका है ? उसमें ऐसी कौनसी विशेषता है जिन्होंने उसे इस पद पर प्रतिष्ठित किया ? वह क्या करेगी कैसी करेगी ? कलिंग की महाराजकुमारी युवराज्ञी छ वर्षकी आयु की बालिका उपन्यास की नायिका है ।

बालिका अमिता भोली और स्नेही है । बाल-हृदय प्राय: ही अत्यंत सरल, ईर्ष्या-द्वेष-कपट से मुक्त होता है । किन्तु अमिता का नन्हा परंतु विशाल हृदय तो दया-ममता के रस से छाल-छला रहा है ,जो भीतर न समाकर प्रतिक्षण बाहर छलका पडता है । उसे करुणा के लिए मनुष्य नही मिलता तो पशु-पक्षियोंके प्रति ही वह उमड पडता है । यह प्रभाव निस्संदेह माँ के व्यवहार और उपदेशों का ही था । जो नित्य प्रति आशीर्वाद देने समय उसको कहती थी --

" तेरा कल्याण हो । धर्म में तेरी आस्था और प्रवृत्ति रहे । तु सदा बहुजन के सुख के लिए बहुजन के परित्राण के लिए यत्न करे । " [6]

अमिता के स्फटिक जैसे स्वच्छ हृदय पर ये शब्द इस प्रकार अंकित थे जैसे पत्थर पर पड़ी लकीर । किसीपर अत्याचार होते देखती तो माँ के यही शब्द दुहराती और कुत्ते की साँकल से अत्याचारी को बाँध लेना चाहती । चाहे वह कौन

मी क्यों न हो । चाहे महामात्य हो या कुत्ता हो । अमिता स्वयं सम्राट अशोक को मी उसी साकल से बाँधने के लिए मोले साहस से आगे बढती है । अशोक कुत्ते की साँकल स्वयं अपने गले में पहन लेता है और नि:स्वार्थ,निश्चल प्रेम में बँध जाता है ।

अमिता अपनी दासी हिता के प्रति अत्यंत अनुरक्त है । हिता के बिना वह पल मर मी नहीं रह सकती । जैसे जलबीन मछली रह नहीं सकती वैसी हिता बिन अमिता रह नही सकती । अमिता हिता के सिवा किसी का मी मानती नहीं वह दासी माँ मी क्यों न हो । हिता उसका सर्वस्व है । शरीर में प्राण की भाँति उसका अस्तित्व उससे अभिन्न है। बाल हृदय स्नेह और वात्सलता में गरीब और धनिक का कोई मेद नहीं करता । हिता और अमिता के परस्पर प्रेम द्वारा यशपाल ने ऐसे सुन्दर रोचक दृश्य उपस्थित किया है जिससे पाठक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । गुडियों और पुतलियों के खेलों द्वारा जीवन की गंभीर समस्याओं की विवेचना यशपाल के ही सामर्थ्य के बक्श कीबात है ।

अमिता के चरित्र की स्वामाविक विशेषता उसका बाल-हृदय है जिसके सामने समस्त राज्य को नतमस्तक होना पडता है । `अमिता` , `दिव्या` आदि उपन्यासों की माँति साधारण बालिका की कहानी नहीं है। पाठक या सहृदय इस बालिका में साधारण मी देखते है और असाधारण मी पाते हैं । उदाहरणात: हाथी पर उसकी सवारी निकलते समय लाखों मनुष्य उस पर पुष्प-वर्षा करते हैं, परन्तु उसे तो वही कमल लेना था जो हाथी में गिर गया था । बालिका का दूसरे बालकोंको मी राजकीय शिविकापर बैठाने की जिद इत्यादि इन स्थलोंपर यशपाल ने बालिका का `बालहठ` तथा बालिकाकी स्वामाविक सरलता के माध्यमसे सामाजिक विषमतापर कितने प्रबल व्यंग्य किये हैं ।

अमिता के राजतिलक के प्रसंग पर लेखक ने अपने विचार से सामाजिक रूढि की असंगतियों के बालिका की सरल स्वामाविकता द्वारा स्पष्ट किया है । बालिका राजसिंहासनपर बैठने के लिए तैयार नहीं है । उसके लिए हिता की उँगली पकडकर

आँगन में उछल-कूद करना या बापू के पीछे उद्यान में बैठना ही अधिक रुचिकर था। उसे न कलिंग की राजेश्वरी बनने में और न सिंहासनरूढ होने में कोई सुख जान पड़ता न उसका कोई लोभ ही था। महारानी अमिता के राज्याभिषेक के उपचार और रीतिकर्म कीए जा रहे थे तो उसे लग रहा था कि महामात्य,महासेनापति राजगुरु और दूसरे बड़े-बड़े उनका खेल बनाकर,उसी प्रकार अपना मनोविनोद कर रहे है। जैसे वह स्वयं दूसरी बालिकाओं के साथ पूतली का खेल खेलती थी। यह उसे अच्छा नहीं लगा तो अमिता हठ करने लगी कि --

" हम राजेश्वरी नहीं बनना चाहती। हिता को राजेश्वरी बनाओ।" [७]

राजतिलक के उपचार आरम्भ होने पर राजगुरु ने सात नदियों और सात सिन्धुओं का जल महारानी पर छिड़का ,अमिता प्रसन्न होकर जोर से खिलखिला पड़ी और स्वयं भी वह पवित्र जल,राजगुरु और दूसरे लोगोंपर छिड़ककर खेलने लगी। राजतिलक और राजदंड धारण करने के उपचार समाप्त हो न हो रहे थे और बालिका एक स्थानपर बैठे-बैठे थक गई थी। जैसे स्वच्छंद पक्षी पिंजड़े में बंद करके रखे हो और उनकी फड़फड़ाहट चल रही हो वैसी ही विवशता में सिंहासन पर बैठाई गई अमिता व्याकुलता से उठकर भाग जाना चाहती थी।

हिता के चातुर्य से अमिता को नृत्य-करती नर्तकियों के पावों में छनक छनक करते नुपरों में रस आने लगा। महारानी नृत्य करने के लिए हठ करने लगी किन्तु महारानी ने नृत्य करना यह बात उचित नहीं थी आचार्य महामात्य ने भी उसे समझाया किन्तु बाल बुध्दि मानने के लिए तैयार नही है आखिर अमिता कहती हैं --

" तो फिर तारा और रत्ना हमारे सामने क्यों नाचती हैं ? हम भी नाचेंगी। हमारा मन भी चाहता है।" [८]

उपर्युक्त वाक्य से हमें यह कहना होगा कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अमिता का चरित्र चित्रण हिन्दी कथा साहित्य में अनुठा और अपूर्व है।

राजमाता --

परम भगवती कलिंग की राजेश्वरी सुनन्दा ,अहिंसा करूणा और ममता की साक्षात प्रतिमा या देवी है। जिनमें हम बौध्द और गांधी दर्शन का सम्मिलित रूप देख पाते हैं। उनकी वेश भूषा भी इतनी ही महान है। जैसा ---

" सोने का कलसा लिए दासी के पीछे ड्योढी में कलिंग की राजेश्वरी नन्दा राजहंसिनी के समान मंद गति से आति दिखाई दी। महारानी का शरीर रूखे काले केशों से कमर तक हिम के समान श्वेत दुशाले से ढंका था। कमर से पाँव के नखों तक भी श्वेत रेशमी वस्त्र का अन्तरवास लिपटा हुआ था। महारानी माथे को तनिक झुकाए,हाथजोडे,मंत्र-पाठ करती हुई चल रहीथी। उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं था। उनका सौम्य रूप भक्ति और बौध्द-श्रमणों के लिए निश्चित और शील के नियमों तथा संयम का प्रतिक था।" ९

महारानी की ईश्वर के प्रति अगाध निष्ठा दिखाई देती है। महारानी प्रजा वत्सल है। तटस्थ होकर वे प्रजा की प्रत्येक बात सुनती है और अपने विश्वास के विरूध्द वे महामात्य या अन्य किसी की भी बात न सुनती। अशोक के आक्रमण से पूर्व उत्तर द्वार पर दुर्ग की आवश्यकता होते हुये भी वे प्रजा का कष्ट नहीं देख सकती। महारानी दुर्ग के लिए भूमि छीनना पाप समझाती है। आचार्य को समझाती हैं महारानी आचार्य को बताती हैं मारनेवाला और मार से भयभीत होनेवाला दोनों भी भ्रम में है। वे हिंसा के विरोध में भी हिंसा करना पाप समझाती है ,अधर्म मानती हैं। महारानीकहती है ---

" हिंसा की प्रतिद्वन्द्विता में हिंसा करना धर्म नहीं अधर्म है।" १०

यहाँ तक तो महारानी से सभी सहमत होते है परन्तु जहाँ भगवान और चमत्कार में उनकी धारणा अंध:विश्वास जान पडती हैं। वही महामात्य उन्हें पूर्वी-दुर्ग में बन्दी कर लेते हैं। महारानी के प्रति पाठक की सहानुभूति भी निश्चय ही समाप्त हो जाती है। देश पर बिकट संकट में अंध:विश्वास सहायक नहीं हो सकता परन्तु महारानी नन्दा की निस्सहाय और असहाय अवस्था के प्रति करूणा बनी

रती है। यशपाल जिसे असंगत मानते है,उसका विरोध करते है,परन्तु उसके प्रति क्रूर नहीं हो जाते ऐसी सहृदयता के बिना सफल भी नहीं हो सकती ।

कलिंग के महामात्य आचार्य सुकंठ शर्मा ज्ञानी,वीर और परम कर्तव्यपरायण व्यक्ति है । कलिंग के महाराज करवेल के पिता के समय से ही राज्य की नीति और शासन महामात्य सुकंठ के कन्धों पर था । महाराज का पराक्रम आचार्य की नीति को निबाहने में शिथिलता न करने में ही था । महाराज के स्वर्गारोहण के पश्चात महारानी वैधव्य को गत जन्म में तप भंग होने के फल मानकर तथागत के वैराग्य धर्म की साधना,चैत्यो और संघ की सेवा में लीन होगई । राज्य की नीति और व्यवस्था पूर्णत: महामात्य के हाथों में होने के कारण प्रजा और राजपुरूषोंने कोई परिवर्तन और शैथिल्य अनुभव नहीं किया ।

राज्य के प्रबंध और राजनीति के चक्रों में ही उनका अधिकांश समय बीता था । यशपालने उनकी अवस्था का स्पष्ट चित्र अंकित किया है । " महामंत्री का कपाल केश रहित हो जाने के कारण माथा सिर के पिछले भाग तक बढ़गया था । श्वेत केशों के छल्लों की एक झालर-सी एक कनपटी से आरम्भ होकर सिर की परिक्रमा करती हुई दूसरी कनपटी तक पहुँच गई थी । ओंठ श्वेत,मूछों और दाढी के संगम में छिपे थे और श्वेत दाढी नाभी तक लटक रही थी । शरीर भूरे रंग के दुशालो से ढका हुआ था । शरीर का जो भाग दुशाले से बाहर दिखाई दे रहा था - भूंजे हुवे ताँबे की भाँति ओजपूर्ण था । "

यशपालजी व्यक्ति का हुबहुब चित्रण करने में सिध्दहस्त दिखाई देते है । महामक्ष्य का जो वर्णन उन्होंने किया है उससे उनके वृध्दत्व का पता चलता है । महामात्य सच्चे अर्थों में राज्य सैनिक थे । कलिंग के साधनों और सैन्य बल पर उनको पूर्ण भरोसा था । अशोक के आक्रमण से राज्य की रक्षा के लिए उत्तर द्वार पर दुर्ग बनाने की योजना महारानी द्वारा अस्विकार कर देने पर सेनापति भद्रकीर्ति अत्यंत क्रोधित होते है । वे आवेश में आकर बोलते है । आचार्य सुकंठ अव्यवस्था की समस्या के मूलको पकड़कर नष्ट करना जानते है । वे अन्तर्निहित कारणोंपर विचा

करते हैं तो उन्हें इस घटना के पीछे कूट नीतिका संदेह होता है।

महामात्य राज्य को संकट से बचाने के लिए रानी से निवेदन करते है -- युध्द के उपरान्त आशंका न रहने पर प्रजा पुन: उस भूमि पर बस सकेगी। संघो और श्रमणों के लिए अधिक विहार भी बन सकते हैं। धर्म का चिंतन और मनन तो वृक्षों के नीचे और कंदराओं में भी हो सकता है। परन्तु सैनिक की शक्ति शिविर या दुर्ग के बिना क्षीण हो जाती है। महारानी किसी तरह भी नहीं मानती तो महामात्य महारानी के मर्म पर आघात करते हैं, ' महाराज ने इस राज्य की मर्यादा की रक्षा केलिए संसार को तुच्छ समझ प्राण दिए।' महारानी इस पर भी विचलित नहीं हुई। इस पर आचार्य सुकंठ शर्मा की कर्तव्य निष्ठा पुकार उठती है --

' आततायी के सम्मुख सिर झुकाकर अपना स्वत्व छोड़ देना मनुष्य का धर्म नहीं है, यह   है।'[१२]

महाराज के सम्मुख कलिंग राजवंश की रक्षा की प्रतिज्ञा स्मरण में ला इसी को धर्म मान वे चाणक्य की कुट नीति का आश्रय लेते हैं। महारानी को पूर्वी दुर्ग में बन्दी करके प्रजा में उनकी तीर्थ यात्रा का समाचार फैला देते हैं। वे अमिता को सिंहासनरूढ कर देश-रक्षा का कार्य निबाहते हैं। अशोक से युध्द करते हैं। वे अपनी ओर से कोई निर्बलता और न्यूनता नहीं रहने देते।

महारानी नन्दा और महामात्य सुकंठ दो परस्पर-विरोधी जीवन आदर्शों के प्रतीक हैं परन्तु लेखक पाठक के हृदय में दोनों के ही प्रति आदर और सहानुभूति उत्पन्न कर सकता है। लेखक का विरोध किसी व्यक्तिसे नहीं जान पड़ता है विरोध दो विचारोंका है एक गांधी विचारों वाले तो दूसरे उल्टे स्वभावके हैं।

छिता अमिता की दासी है। वह अत्यन्त सुन्दर और स्वामिभक्त है। कथा में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। दासी होने पर भी अमिता पर उसका अत्यधिक प्रभाव है। अमिता छिता के बिना एक पल भी नहीं रह सकती। अमिता की अभिन्न अंतरंग

होने के कारण उसका महत्व उपन्यास में अमिता के समान ही है। छिता और मोद तथा छिता और अमिता की कथाओंद्वारा प्रेम और रोमांच ,रहस्य,उत्साह आदि का पुट कहानी में आ जाता है। छिता की चतुरता और दृढता के सम्मुख सभी का नतमस्तक होना पडता है। छिता को 'अमिता' उपन्यास में शोषित वर्ग के चरित्र की प्रतिनिधि कहा जा सकता है। उसके जीवन वृत्तान्त और करूण कथाद्वारा यशपालने एक बार फिर जन्म से शोषित वर्ग के प्रति मानव की बुध्दि को ललकारा है।

कलिंग के महाराज कही भी रंगमंच पर प्रत्यक्ष नही आते,परन्तु दूसरे पात्रों द्वारा उनके चरित्र पर प्रकाश पडता है। महाराज आखेट में अत्यन्त रूचि रखते थे और उनकी रूचि प्रजा पालन और भोग-विलास में समान रूप से थी । उन्होंने प्रथम युध्द में स्वयं सैन्य संचलन करके अशोक को पराजित किया और युध्द में लगे घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। महाराज के प्रति पाठक के मन में आदर उत्पन्न करने में लेखक का प्रयोजन स्पष्ट है।

अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में तो लेखक ने उपन्यास के नाम ही नारी पात्रों के नाम पर रखे है -- जैसे 'दिव्या', में दिव्या और 'अमिता' में अमिता ही उपन्यास की नायिका और प्रमुख नारी पात्र है। अपने नारी चित्रण में कहीं कहीं यशपाल अश्लीलता की सीमा का स्पर्श करने लग गये है किन्तु उन्हे हमेशा साधारण भावभूमिपर ही प्रतिष्ठित किया है। यशपाल के चरित्र-चित्रण में जहाँ विविधता के दर्शन होते है वहाँ कुछ पात्रों को छोड केवल लेखक की लेखनी के संकेतपर ही कठपुतली के सदृश्य कार्य करते हुये प्रतीत होते है। उनका स्वयं का कोई अस्तित्व और व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता। यदि और अधिक सुक्ष्मता से देखा जाय तो ऐसा लगेगा कि व्यक्तित्व प्रधान पात्रों को भी यशपाल ने प्रतिनिधि पात्रों के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। उनके पात्रों को देखकर ऐसा लगता है कि लेखक उनसे अपनी बात उनसे कहलवाने वालों है।

इस प्रकार अमिता के समस्त पात्रों का चरित्र चित्रण बडे ही निष्पक्ष स्वाभाविक ,मार्मिक और कलात्मक ढंग से हुआ है।

निष्कर्ष

अमिता उपन्यास की संपूर्ण चरित्र सृष्ठी अपने आपमें ऐतिहासिक व्यक्तियोंकि विभिन्न रूपों,समस्याओं और स्तरों को उध्दाटित करनेवाली बहुरंग सृष्टी हैं। उपन्यास के प्रत्येक पात्र की विशिष्ठता प्रदान की गयी हैं। प्रस्तुत उपन्यास में समाज में होनेवाली व्यवस्था का चित्रण हुआ हैं। इस उपन्यास के सभी पात्र मानव स्वभाव की विशेषता कोस्पष्ट करते हैं। इनमें राजा,उच्च वर्ग, मध्यमवर्ग , समाजसुधारक,दास, इ.सभी प्रकारके पात्र हैं। स्त्री पात्रों में विविधता दिखाई देती हैं। जैसे दासी मानंगी और हिता में फर्क दिखाई देता हैं। ये सभी पात्र ऐतिहासिक या मानव स्वभाव का चित्रण करतें हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अधिकांश पात्र एक विशेष वर्ग का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। हिता अपनी इच्छापूर्ति के लिए अमिता को माँ की याद देने का तरीका निकालती है। दासी होकर भी वह अपनी बुध्दीको चलाने का प्रयत्न करती हैं। महास्थवर बौध्द कर्मकाण्ठी धर्मगुरू का,सौमित्र व्यापारी का,सम्राट अशोक राजाका, महारानी नंदा,एक आदर्श माता तथा धार्मिक पात्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। आ.सुकंठ शर्मा,तथा महासेनापती कुनीतिज्ञ और स्वामिभक्त के रूप में आते हैं। महाराज करवेल एक प्रजाहितैषी राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

स्पष्ट है कि वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते हुये भी ` अमिता ` के पात्र व्यक्तिगत विशेषताओंसे युक्त हैं। कोई भी पात्र केवल अच्छाइयों से युक्त होकर प्रभावी नही बन गया हैं। वे अपने गुणों के अनुसार प्रभावी बने हैं। पात्रोंका स्वाभाविक विकास उपन्यास की विशेषता है। इस प्रकार विविध वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों के माध्यमसे लेखक ने ऐतिहासिक कल्पना के आधुनिक काल में एक विश्वशांति का संदेश लेकर समाज के सामने प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयत्न ` अमिता ` द्वारा किया हैं। वे उससे सफल भी हुये हैं। समाज में होनेवाली वर्णव्यवस्था का सामान्य जनता पर कितना असर पडता है वह लेखक ने पात्रों के द्वारा स्पष्ट किया है।

अमिता उपन्यास के चरित्र चित्रण सफल हैं।

इस उपन्यास में अमिता, स्त्री प्रमुख पात्र है। अमिता नायिका के रूप में आते हुये वह स्थिर पात्र भी हैं। सम्राट अशोक, भद्रकीर्ति, आचार्य, सौमित्र ये विकसित पात्र हैं। मुख्य पुरूष पात्र अशोक भी उसके मन में परिवर्तन आता है। इस प्रकार चरित्र चित्रण की दृष्टीसे 'अमिता' उपन्यास पूर्ण सफल हैं।